ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-4* Issue-8* September- 2019
Innovation The Research Concept

हरिशंकर परसाई और समकालीन व्यंग्य

वन्दना त्रिपाठी
सहा0प्रा0 हिन्दी
शा0ठा0र0म0वि0
रीवा, भारत

सारांश

यदि हम गौर करे तो पाते है कि गरीब हर व्यक्ति व्यंग्यकार होते है, एक स्कूल का विद्यार्थी जो अपने शिक्षक के बारे में रुखे शब्दों का प्रयोग करता है, हम और आप कॉफी हाउस या रेस्तरां में बैठे संसार की धूर्तता और राजनीतिज्ञों की मूर्खता आदि पर बहस करते है, तो वह भी व्यग्य का का ही रूप है। परंतु वास्तविक व्यंग्यकार हम सबसे प्रतिभा और ताकत या यों कहा जाय साहस में भिन्न होता है। यह अपदेशक या मसखरा भी हो सकता है क्योकि मिथ्याचार, असमानता पाखंड आदि पर प्रहार करने के लिए शायद उन पर हंसना एक कुशल आक्रमण होता है।

व्यंग्य शब्द विकृत अंग से बना है। यदि समाज में विसंगतियां, विकृतियॉ एवं विद्रूपता होगी तो व्यंग्य का जन्म होगा। समाज की विसंगतियों को दूर करने के लिए जो विधा आयी वह व्यंग्य है। व्यंग्य में एक धार होनी चहिए जो विकृत अंग को तराष कर कांट–छांट कर एक स्वस्थ अंग या समाज का निर्माण करे।

व्यंग्य की बात करते समय हम समाज पर भी बात करना चहिए। भीड़ समाज नहीं है, जहॉ पारस्परिक हितों की चिन्ता होती है वह समाज होता है। समाज में सब के हित का दीर्घकालीन चिन्तन छिपा होता है जब यह चिन्तन छिपा होता है जब यह चिंतन समाप्त हो जाता है, समाज विकृत हो जाता है तथा व्यंग्य में है। यह वह अथियार या अस्त्र है, जिससे व्यंग्कार समाज को सुधारने की एक कोशिश करता है। जिस प्रकार थानेदार को डण्डा चोर–उचक्कों को ठीक करने का काम आता है, वैसे ही व्यग्य विकृत समाज को ठीक करने का काम आता है।

व्यंग्य वह आइना है, जिसमें व्यंग्यकार अपने अपने अलावा सभी का चेहरा देखता है और उसे सुन्दर बनाने की चेष्टा करता है। व्यंग्कार प्रत्युत्पन्नमतिः (विटी) वाला होता है वह साहसी होता है।

हरिशंकर परसाईजी ऐसे ही व्यंग्यकार हैं। जो अपने पैने शब्द बाण से पाठकों के अन्तर्मान को बंध देते है। यह (इनका व्यंग्य) साधे हुए बाण के समान शार्ट कर रास्ते से सीधा प्रहार करता है।

यद्यपि व्यंग्य का उद्देश्य पाठकों का मनोरंजन, मनोविनोद भी होता है। तथापि परसाईजी का व्यंग्य केवल मनोविनोद के लिए नहीं होता, वह समाज की कमजोरियों, विसंगतियों को लिखकर उन पर कठोर प्रहार करता है। उनकी लिखी कुछ प्रसिद्ध पुस्तको के नाम है– जैसे दिल फिरे, हंसते है रोते है, रानी नागफनी की कहानी, तब की बात और थी, बेईमानी की परत, सदाचार की ताबीज ठिठुरता हुआ गणतन्त्र, विकलांग श्रद्धा का दौर आदि।

परसाईजी ने समकालीन व्यंग्य के एक नई दिशा दी है। उन्होने अपने व्यंग्य में सामाजिक तथा राजनीतिक चेतना भर दी है। एक कुशल व्यंग्य शिल्पी वह होता है, जो हमें सोचने को बाध्य कर दे। परसाईजी ऐसे ही व्यंग्यकार है। उनकी व्यंग्य रचनाएं हमारी अंर्तचेतना को झकझोर देती है, इनका व्यंग्य हमें मात्र हंसाता या गुदगुदाता या मनोरंजन ही नहीं करता, बल्कि चेतना को झकझोर देता है, मन को तिलमिला देता है तथा सोचने को बाध्य कर देता है। जीवन का कोई भी पक्ष इनकी पैनी नजर से अछूता नहीं है। यदि हम कहें कि परसाईजी की व्यंग्य रचना तत्कालीन जीवन के विविध अंतर्विरोध, मिथ्याचार, असमानता असामंजस्य, पाखंड आदि का दस्तावेज है, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। आए दिन आस–पास घट रही सामान्य सी घटनाओं से असामान्य समय संदर्भो और व्यापक मानव मूल्यों की उद्भावना न सिर्फ रचनाकार को मूल्यावान बनाती है, अपितु व्यंग्य विधा को नयी ऊचाईयां सौपती है। इन सभी दृष्टि से परसाईजी की व्यंग्य कृतियां अति महत्वपूर्ण हैं।

परसाईजी की व्यंग्य रचना जीवन के विविध पहलुओं का विश्लेषण है। इनके व्यंग्य में न्यायालय, न्याय प्रक्रिया, पुलिस प्रशासन, राजनेताओं तथा सरकारी तंत्र आदि पर तीखा व्यंग्य है। परसाईजी कहते हैं कि न्यायालय हमें

फैसला देता है। न्याय नहीं निर्णय सुनाया जाता है। उपरोक्त तालिका में देखकर पता चलता है कि इनका व्यंग्य ठिठुरता हुआ गणतंत्र देश की तत्कालीन राजनीति और राजनीतिज्ञों तथा सरकारी व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य है। चंद पंक्तियॉ परसाईजी की वाक्पटुता को दर्षाती है।

स्वतंत्रता दिवस भी तो भरी बरसात में होता है। अंग्रेज बहुत चालाक थे। भरी बरसात में स्वतंत्र करके चले गए। उस कपटी प्रेमी की तरह भागे जो प्रेमिका का छाता भी ले जाए। वह बेचारी भीगती बस स्टैण्ड जाती है, तो प्रेमी की नहीं, छाता चोर की याद सताती है। स्वतंत्रता दिवस भीगता है और गणतंत्र दिवस ठिठुरता है।

परसाईजी का व्यंग्य इतना तीक्षण होता है कि वह पाठकों को सच्चाई से अवगत कराते हुए सोचने को विवश कर देता है। ज्यों–ज्यों समाज में विसंगतियां तीव्र होती है त्यों–त्यों व्यंग्यकार तीव्र होता है।

प्रायः व्यंग्य वर्तमान की कमजोरियों को दर्शाता है, पर परसाईजी का व्यंग्य हर युग, हर समय, हर परिस्थिति के लिए तथा हमेशा के लिए सटीक रहता है। यह कभी आउडडेडेट नहीं हो सकता। परसाईजी ने अपने व्यंग्य कर कमल हो गये में तत्कालीन राजनीतिज्ञों पर व्यंग्य किया है वे लिखते है– मैने भरसक कोशिश की है कि हाथ कमल न हो जाए हथेली पर मैने कांटे बोये है। मगर न जाने क्या हुआ, कि कर एकाएक कमल हो गए। अब मैं परेशान हूॅ। जिनके हाथ मुझसे पहले कमल हुए थे उनकी दुर्दशा देख रहा हूॅ। वे कर कमलों से उद्घाटन करने जाते है, और मुॅख कमल खोलते है, तो माइक की तबीयत चाटा जड़ देने की होती है। अभी वह जप्त किए हैं, पर एक वक्त ऐसा आएगा माइक मुख में घूसकर टेटरी बंद कर देगा। कर कमल वाले मुॅह खोलते है कि लड़के चिल्लाते है, भाषण नहीं नौकरी दो। वे संभलकर कहते है, यह देश तुम युवकों का है। लड़के चिल्लाते हैं, बकवास बंद करो। वे करते है इस देश का तुम्हे निर्माण करना है। लड़के कहते है चुप रह वे। वे कहते है, हमे तमसे बड़ी बड़ी आशांए है। लड़के चिल्लाते है, शटप। फिर घेराव नारे, जूता फेंक और कभी पिटाई भी।

हरिशंकर परसाई जनता क लेखक है हालांकि उन्होने अपने बारे में ऐसा कभी नहीं कहा। हरिशंकर परसाई जी के शब्दों में–

जनाता का लेखक का लेबल मुझ पर चिपका दिया गया है।

वास्तव में यह बात सत्य है, परसाई जी के पास राजनैतिक तथा सामाजिक व्यंग्य रचनाओं का भण्डार है। कोई भी क्षेत्र इनसे अछूता नहीं रहा है। वे शब्दों के बाजीगर है, सौदागर है और समाज तथा देश को बचाने के लिए प्रतिबद्ध है और माध्यम है– इनकी व्यंग्य रचनाएं।

हरिशंकर परसाई हिंदी के पहले रचनाकार है जिन्होंने व्यंग्य को विधा का दरजा दिलाया और उसे हल्के–फुल्के मनोरंजन की परम्परागत परिधि से उबारकर व्यापक प्रश्नों से जोडा है। इनकी व्यंग्य रचनाएं हमारे मन में गुदगुदी पैदा नहीं करती, बल्कि हमें उन सामाजिक वास्तविकताओं के आमने सामने खड़ा करती है। जिनसे किसी भी व्यक्ति का अलग रह पाना लगभग असंभव है। लगातार खोखली होती जा रही हमारी सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था में पिसते मध्यमवर्गीय मन की सच्चाईयों को उन्होंने बहुत ही निकटता से पकड़ा है। सामाजिक पाखंड और रूढ़िवादी जीवन मूल्यों की खिल्ली उड़ाते हुए उन्होंने सदैव विवेक और विज्ञान सम्मत दृष्टि को सकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया है। उनकी भाषा शैली में खास किस्म का अपनापन है, जिससे पाठक यह महसूस करता है कि लखक उसके सिर पर नहीं उसके सामने बैठा है।

परसाईजी के व्यंग्य का विषय के सवाल प्रजातंत्र के नाम पर स्वार्थी, ढोंगी और चालाक राजनेता ही नहीं वरन् न्याय प्रकिया, धूसखोरी, भ्रष्टाचार सभी पर व्यंग्य करते है।

परसाईजी की रचना एक काना एवं एक ऐंचकताना न्यायालय की न्याय प्रकिया की कलई खोलती। भारतीय न्याय व्यवस्था एक ऐंचे ताने आंख वाले आदमी के समान है जो देखता किसी और को है, पर लगता है किसी और को देख रहा है।

साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है, यदि समाज सुधार जाएगा, तो व्यंग्य गायब हो जाएगा। न्याय व्यवस्था पर व्यंग्य करते हुए परसाईजी लिखते है।–

बाथरूम का दरवाजा ठेला तो एक नंगा नहाते दिखा। हमने कहा– तुम न्याय हो ना! जल्दी कपड़े पहनों बात करनी है। उसने कहा– मैं न्याय नहीं अन्याय हूॅ! नंगा ही रहता हूॅ। अन्याय को क्या शर्म! न्याय और मैं जुडवा भाई है। एक सी शक्ल है। लोग उसके धोखे में मुझसे मिल लेते है। हमने पूछा–दोनों में कुछ फर्क तो होगा? उसने कहा–हॉ है। देखों न मैं ऐंचक ताना हूॅ। तुम समझते हो किसी और को देख रहा हूॅ, पर देख तुम्हीं को रहा हूॅ। मेरा भाई न्याय काना है। एक ही तरफ देखता है। अब वह बहरा भी हो गया है।

न्याय व्यवस्था पर इससे तीखा प्रहार अन्यत्र कहीं दिखाई नहीं पड़ता। आज समाज में जो भी हो रहा है, जो होता आया है, परसाई जी का व्यंग्य उन सबका आइना है। परसाईजी लिखते है–ऐ न्याय का दरवाजा खटखटाने वालों, तुम आगे का दरवाजा खटखटाते हो और वह पिछले दरवाजे से कोतवाल से हिदायतें लेने चला जाता है। न्याय बहरा है। खटखटाहट सुन ही नहीं सकता। वह जो एक ऐंचक ताना दरवाजा खोलता है, अन्याय है। महज दरवाजा खटखटाने से जो मिलता है, वह अक्सर होता है। दरवाजा तोड़े बिना न्याय नहीं मिलता।

परसाईजी के व्यंग्य की धारा कितनी पैनी है, इसका तो हम अनुमान लगा ही चुके है। न्याय–व्यवस्था, घूसखोरी, भ्रष्टाचार, झुठी गवाही आदि का इतना सटीक व्यंग्य अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। परसाईजी लिखते है– भगवान को साक्षी करके अदालतों में जितना झूठ बोला जाता है उतना भगवान के पीछे नहीं। आदमी जितना ढीठ हो गया है, सत्य नारायण उतना ही उदार।

परसाईजी के सूक्ष्म निरीक्षण पैने अनुभव और चिंतन के कारण इनका व्यंग्य रोचक हो जाता है, तथा पाठक को बार–बार पढ़ने के लिए प्रेरित करता है। अदालत में झूठी गवाही के संदर्भ में इतनी टिप्पणी है–

'कई दिन लगातार मैं साक्ष्य का यह खेल देखता रहा। मैं हैरान कि बाहर सच्चा आदमी ढूंढे नहीं मिलता, मगर अदालत में इतने सच्चे किन अनजान कोनों से

निकलकर इकट्ठे हो जाते हैं। झूठ बोलने के लिए सबसे सुरक्षित जगह अदालत है। जहां सुरक्षा के लिए भगवान और न्यायाधीश हाजिर होते है।'

परसाईजी की व्यंग्य रचनाएं निश्चित ही एक धारदार अथियार, एक तीर के समान है जो पाठकों के अंतर्मन को बेधती है, जिससे पाठक चिन्तन करने के लिए बाध्य हो जाता है और परसाईजी की कुशल व्यंग्य– शिल्पी होने की दाद होती है।

संदर्भ ग्रन्थसूची

(1) हरिशंकर परसाई ठिठुरता हुआ गणतंत्र
(2) हरिशांकर परसाई प्रतिनिधि व्यंग्य राजकमल
(3) हरिशंकर परसाई प्रतिनिधि व्यंग्य की भूमिका से
(4) हरिशंकर परसाई प्रतिनिधि व्यंग्य फ्लैप पर (जोगेन चौधरी की टिप्पणी) समाहत
(5) हरिशंकर परसाई, ठिठुरता हुआ गणतंत्र